⇒ घूमर वाद्य यंत्र ⇒ ढोल, नगाड़ा, सहनाई

दो बासुरियों ⇒ बड़ी, छोटी ← नाक से बजाते है।

राज्य वाद्ययंत्र ⇒ अलगोजा ⇒ काष्ठ वाद्य यंत्र ⇒ प्रसिद्ध कलाकार ⇒ रामनाथ चौधरी

पदमपुरा (जयपुर)

4, 7, छेद

लोकनृत्य

Note ⇒ राज्य गीत ⇒ केसरिया बालम आओ न पधारो नी मारे देश

① घूमर नृत्य ⇒

- राज्य नृत्य
- नृत्यों का सिरमौर
- राज० की आत्मा
- हाथों का लचकदार संचालन
- सवाई के आठ चरण
- * भीलो के द्वारा शुरू किया, सामन्तशाही नृत्य
- रजवाड़ी नृत्य कहा जाता है।
- तीज व गणगौर पर किया जाता है।

② कच्ची घोड़ी ⇒

- * शेखावाटी, नागौर ⇒ फूल के खिलने, मुरझाने का आभास
- केवल पुरुष
- * विवाह
- * लकड़ी की घोड़ी, तलवार, विशेजित वेश भूषा
- * झांझ वाद्य यंत्र

③ घूड़ला नृत्य

- जोधपुर । मेवाड़
- राजा सातल
- घूड़ला खाँ
  - अजमेर के सुबेदार मल्लू खाँ का सेनापति
- * शीतला अष्टमी से गणगौर तक
- मुख्य कलाकार ⇒

1960 विजय दान देथा ने भाप स्थापना ⇒ स्थापना (जोधपुर)

- छिद्रित मटकी में दिपक जलाकर
- प्रसिद्ध कलाकार ⇒
  - कोमल कोठारी ⇒ पद्मश्री, पद्मभूषण
  - देवीलाल सांभर ⇒ 1952 भारतीय लोक कला मण्डल (उदयपुर)
  - मणिशंकर

(विजयी) कहा जाता है — कठपुतली दिखाई

(4) अग्नि नृत्य ⇒

- जसनाथी सम्प्रदाय के लोग
- पुरुष
- * कतरीयासर गाँव (बीकानेर)
- * अंगारो पर किया जाता है।
- आग व फाग के दर्शन होते है
- अंगारो ⇒ मतीरा
- धूणा
- * फते – फते ध्वनि
- गंगासिंह ने प्रसिद्ध

(5) ढोल नृत्य

- * जालौर
- पुरुष
- विवाह
- * थाकना शैली
- जातियाँ ⇒ (ढोली, माली, सरगड़ा, भील)
- जयनारायण व्यास ने प्रसिद्धि दिलाई

चारबैत नृत्य ⇒ टोंक

⑥ चरी नृत्य ⇒

- किशनगढ़ (अजमेर)
- * गुजर महिलाएँ
- मटकी में कपास के बीज रखे जाते है।
- प्रसिद्ध नृत्यांगना ⇒ फलकू बाई
- झूमर नृत्य ⇒ गुर्जर महिलाओ के द्वारा
- 1986 में किशनगढ़ की एक राजकुमारी गणगौर झूमर
- अकेडमी → चरी, झूमर

⑦ भवाई नृत्य ⇒

- * भवाई जाति के लोग
- उदयपुर सम्भाग
- नृत्य कम करतब ज्यादा दिखाए जाते है।
- नृत्यांगना ⇒ रूपाराम, तारा शर्मा, रूपसिंह
- तलवार पर नाचना, ट्यूबलाईट फोड़ना, थाल पर पाँच सात मटकीया रखकर नृत्य किया
- बोरी, डोकरी, शंकरीया, ढोलामारू कहानीयो पर नृत्य किया जाता है। भवाई

⑧ तेरह ताली ⇒

- * कामड़िया पंथ की महिला
- * रामदेवजी के मेले में
- बैठकर किया जाता है।
- 13 मंजीरे → 9 मंजीरे दाये पैर
- → 2 कोहनी मे
- → 2 हाथो मे

- करतब दिखाया
- पादरला गाँव (पाली)
- तम्बूरा / चौतारा वाद्य यंत्र
- प्रसिद्ध कलाकार ⇒ * मांगी बाई
  - * लक्ष्मणदास कामड़िया

⑨ बम नृत्य ⇒

- * अलवर + भरतपुर
- * नगाड़ा → बम
- * गीत → रसिया
- * बम रसिया
- होली के अवसर पर किया जाता है।
- * नई फसल आने में
- पुरुष के द्वारा किया जाता है।

⑩ गीदड़ नृत्य ⇒

- V.V.V.V.IM शेखावाटी
- होली
- व्यवसायिक नृत्य
- गणगौर, मेहरी ⇒ जो पुरुष महिला बनकर नाचे

⑪ डांडिया नृत्य ⇒

- मारवाड़ में किया जाता है

└→ पुरुष के द्वारा
└→

(12) गरबा नृत्य ⇒
├→ डुँगरपुर + बाँसवाड़ा
├→ पुरुष + महिलाएँ
└→

जनजातियों के लोकनृत्य

(1) भीलो के	गरासियो	कालबेलिया
गैर	वालर	शंकरीया
गवरी	माँदल	बागड़ीया
युद्ध	लूर	चकरी
द्विचक्रि	कूद	इण्डोणी
हाथीमना	जवारा	पणिहारी
घूमरा	मोरिया	
नेजा	गौर	

कंजर	कथौड़ी	मेव
चकरी	मावलिया	रणबाजा
धाकड़	होली	रतवई

शहरीया

शिकारी

NOTE ⇒ पैजणा नृत्य

→ वागड़ में किया जाता है। (डुंगरपुर + बांसवाड़ा)

→

→

शैली → चंग → शेखावाटी

→ (बिंदोरी) → झालावाड़

→ डांग नृत्य → नाथद्वारा

→ मादल थाली बजाई जाती है

★ नाथद्वारा का पुराना नाम ⇒ सिंहाड़

NOTE ⇒ 1. ⇒ M. गवरी नृत्य ★ ⇒ भीलों का

→ (राई नृत्य)

→ मेवाड़ (भील पुरुषों के द्वारा)

→ मुख्य पात्र ⇒ राई बुडी (राई पुरीया)

→ रक्षाबंधन के अगले दिन से शुरू होकर 40 दिन तक चलता है।

→ शिव - भस्मासूर की कहानी पर आधारित

→

NotE ⇒ 2
V.M.

वालर नृत्य ⇒

→ वाद्य यंत्र का प्रयोग नही किया जाता है।

→

→

→

→

→

NOTE 3

कालबेलिया नृत्य ⇒

- → 2010 में विश्व UNESCO की अमूर्त धरोहर के रूप में शामिल
- → प्रसिद्ध नृत्यांगना ⇒ गुलाबो
- → बीन वाद्य यंत्र

NOTE 4. 2013 में 6 पहाड़ी किलों विश्व UNESCO की सूची में शामिल

चीकु → चित्तौड़गढ़, कुम्भलगढ़

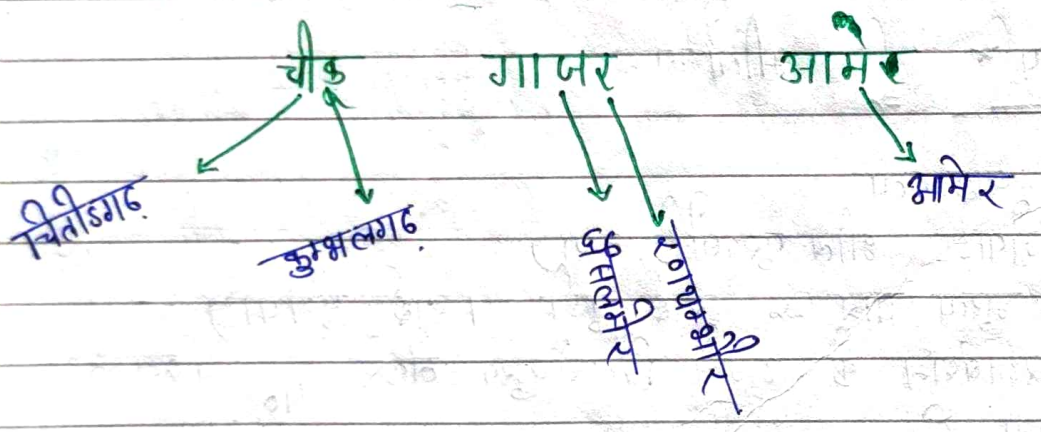

गाजर → जैसलमेर, रणथम्भौर

आमेर → आमेर

NOTE 5. 2010

→ जंतर-मंतर को विश्व UNESCO की सूची में शामिल किया गया।

NOTE 6 2019

→ जयपुर के परकोटे को UNESCO की सूची में शामिल किया गया।